तृतीय अध्याय

11119CH03

रामायण, महाभारत एवं पुराण

रामायण और *महाभारत* संस्कृत भाषा के ऐसे महान् ग्रन्थ हैं, जिन पर भारत की बहुत बड़ी साहित्यिक सम्पदा आश्रित है। ये दोनों ग्रन्थ वैदिक और लौकिक साहित्य के सन्धि काल में लिखे गए। इनसे संस्कृत साहित्य ही नहीं, अपितु भारतीय समाज भी प्रभावित हुआ। सामान्य भारतीय जीवन पर भी *रामायण* और *महाभारत* का व्यापक प्रभाव पड़ा है। भारतीय समाज के विषय में कोई भी अध्ययन इन महाग्रन्थों के अनुशीलन के बिना अपूर्ण है। दोनों ग्रन्थों ने अनेक कवियों और नाटककारों को कथानक दिए हैं, इसलिए इन्हें उपजीव्य काव्य कहा जाता है।

दोनों ग्रन्थों का प्रभाव समान होने पर भी कई दृष्टियों से ये परस्पर भिन्न हैं। *रामायण* को आदिकाव्य कहा जाता है, क्योंकि इसने वैदिक संस्कृत से भिन्न लौकिक संस्कृत में काव्यधारा का प्रवर्तन किया। इसके रचयिता वाल्मीकि आदिकवि कहे जाते हैं। दूसरी ओर *महाभारत* को इतिहास कहते हैं, जिसके रचयिता व्यास हैं। वह विश्वकोष के समान भारतवर्ष के ज्ञान-विज्ञान के सभी पक्षों का निरूपण करता है। इसके वर्तमान स्वरूप के विकास में कई पीढ़ियों का योगदान है।

रामायण

रामायण के रचयिता वाल्मीकि ने प्रथम अलंकृत काव्य लिखकर समस्त परवर्ती भारतीय कवियों के लिए आदर्श प्रस्तुत किया था (मधुमयभणितीनां मार्गदर्शी महर्षि:)। कहा जाता है कि एक निषाद द्वारा क्रीडारत क्रौञ्च पक्षी के मारे जाने की घटना देखकर, करुणा से वाल्मीकि का हृदय द्रवित हो उठा और उनके मुख से स्वयं ही यह पद्य फूट पड़ा—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम: शाश्वती: समा:।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधी: काममोहितम्।।

महर्षि वाल्मीकि की वाणी अनुष्टुप् छन्द में फूटी थी जो लौकिक संस्कृत भाषा का श्लोक था। उसी वाणी में उन्होंने आदर्श पुरुष राम की कथा लिखी। रामायण में राम की कथा बहुत विस्तार से वर्णित है जहाँ-तहाँ आवश्यकता के अनुसार इसमें कवि वाल्मीकि

Reprint 2025-26

ने अवान्तर कथाएँ दी हैं एवं प्रकृति का भी व्यापक वर्णन किया है। वाल्मीकि की दृष्टि इतनी सूक्ष्म है और कल्पना-शक्ति इतनी उर्वर है कि एक-एक दृश्य को उन्होंने बहुत विस्तार प्रदान किया है।

रामायण का विभाजन सात काण्डों में हुआ है— बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड। प्रत्येक काण्ड को सर्गों में विभक्त किया गया है। परवर्ती संस्कृत महाकवियों ने भी *रामायण* के इस आदर्श पर महाकाव्यों को सर्गों में विभक्त किया है तथा महाकाव्य के लक्षणों को स्थापित किया। इसी आधार पर कालिदास, भारवि, माघ आदि ने महाकाव्यों की रचना की। *रामायण* में 24,000 श्लोक हैं।

रामायण के अभी तीन संस्करण उपलब्ध हैं, जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित हैं। तीनों संस्करणों की समीक्षा करके बड़ौदा से *रामायण* का विशिष्ट संस्करण निकला है।

रामायण के रचनाकाल के विषय में विद्वानों ने बहुत विवेचन किया है। *महाभारत* से पूर्व इसकी रचना हो चुकी थी, क्योंकि *महाभारत* में *रामायण* की पूरी कथा वर्णित है और राम के जीवन से सम्बद्ध कुछ स्थलों को वहाँ तीर्थ के रूप में देखा गया है। *रामायण* का संकेत जैन और बौद्ध ग्रन्थों से भी प्राप्त होता है। इस प्रकार *रामायण* की रचना पाँचवी शताब्दी ई. पू. में मानी जाती है।

रामायण का सांस्कृतिक मूल्य

रामायण का सांस्कृतिक महत्त्व बहुत अधिक है। वाल्मीकि ने इस महाकाव्य के द्वारा जीवन के आदर्शभूत और शाश्वत मूल्यों का निर्देश किया है। इसमें उन्होंने राजा, प्रजा, पुत्र, माता, पत्नी, पति, सेवक आदि संबंधों का एक आदर्श स्वरूप प्रस्तुत किया है। राम का चरित्र एक आदर्श महापुरुष के रूप में है, जो सत्यवादी, दृढ़संकल्प वाले, परोपकारी, चरित्रवान्, विद्वान्, शक्तिशाली, सुन्दर, प्रजापालक तथा धीर पुरुष हैं। वाल्मीकि ने उनके गुणों को बहुत विस्तार से प्रकट किया है। इसी प्रकार सीता के आदर्श तथा गौरवपूर्ण पत्नी-रूप को भी वाल्मीकि ने स्थापित किया है। राम का भ्रातृप्रेम *रामायण* में अत्यंत सरल एवं भावपूर्ण शब्दों में व्यक्त किया गया है—

देशे देशे कलत्राणि देशे देशे च बान्धवा:।
तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदर:।।

किसी भी देश में पत्नी प्राप्त की जा सकती है तथा बन्धुत्व कहीं भी स्थापित किया जा सकता है, किन्तु सहोदर भाई कहीं नहीं प्राप्त हो सकता है।

Reprint 2025-26

राम का चरित्र इतना उदार और ऊँचा है कि वे रावण की मृत्यु के बाद विभीषण को उसके शरीर-संस्कार का उपदेश देते हैं। वे कहते हैं— विभीषण! शत्रु की मृत्यु से वैर का अन्त हो जाता है। हमारी शत्रुता भी समाप्त हो गई। अब तो रावण का शरीर मेरे लिए भी वैसा ही है, जैसा तुम्हारे लिए—

मरणान्तानि वैराणि निर्वृत्तं न: प्रयोजनम् ।
क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव ।।

भरत की राज्यपद के प्रति अनासक्ति, लक्ष्मण की भ्रातृ-सेवा एवं हनुमान् की स्वामिभक्ति ये तीनों जीवन के सर्वोच्च आदर्श *रामायण* में उपलब्ध होते हैं। काव्य का उद्देश्य है— मधुरभाव से उपदेश देना। उसमें वाल्मीकि को पूरी तरह सफलता मिली है। प्रकृति-वर्णनों में कवि वाल्मीकि तन्मय हो जाते हैं। उनकी उपमाएँ हृदय को आकृष्ट कर लेती हैं। अशोकवाटिका में शोकमग्न सीता की तुलना कवि संदेह से भरी स्मृति, अधूरी श्रद्धा, नष्ट हुई आशा, विघ्न से युक्त सिद्धि, कलुषित बुद्धि तथा लोकनिन्दा के कारण नष्ट कीर्ति से करते हैं। इससे कवि हमारे हृदय में करुणा की भावना जगाते हैं।

रामायण से संस्कृत कवियों को तथा समस्त भारतीय भाषाओं के कवियों को भी राम-कथा लिखने की प्रेरणा मिली तथा विदेशों में भी रामायण का प्रभाव स्थापित हुआ। पूरे एशिया महाद्वीप की सर्वाधिक प्रसिद्ध कथा राम-कथा ही है।

महाभारत

महर्षि व्यास द्वारा रचित *महाभारत* संस्कृत वाङ्मय का सबसे बड़ा ग्रन्थ है, जिसमें एक लाख श्लोक हैं। इसीलिए इसे शतसाहस्री संहिता भी कहते हैं। *महाभारत* में मूलत: कौरवों और पाण्डवों का संघर्ष वर्णित है, किन्तु प्रासंगिक रूप से प्रतिपादित जीवन-विषयक प्राचीन भारतीय ज्ञान के सभी पक्षों का यह अद्भुत विश्वकोष है। इसका शान्तिपर्व युगों से जीवन की समस्याओं का समाधान करता आ रहा है। इस इतिहास ग्रन्थ को प्राचीन भारतीयों ने धर्म-ग्रन्थ की मान्यता दी है तथा इसे पंचम वेद कहा है। दार्शनिक समस्याओं का समाधान करने वाला विश्वप्रसिद्ध ग्रन्थ *भगवद्गीता, महाभारत* के भीष्मपर्व का एक अंश है। *महाभारत* अपनी विशालता के अतिरिक्त संसार के सभी विषयों को समाविष्ट करने के कारण महत्त्वपूर्ण है।

इसके विषय में कहा गया है—

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ।।

Reprint 2025-26

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों लक्ष्यों के विषय में जो बातें इस ग्रन्थ में कही गई हैं, वे ही अन्यत्र मिलती हैं, किंतु जो इसमें नहीं हैं, वे कहीं नहीं मिलती हैं। इस उक्ति से महाभारत के विवेचनीय विषय की व्यापकता सिद्ध होती है।

रामायण के समान *महाभारत* भी संस्कृत कवियों के लिए कथानक की दृष्टि से उपजीव्य ग्रन्थ रहा है। इसकी मुख्य कथा तथा उपाख्यानों के आधार पर विभिन्न कालों में संस्कृत कवियों ने काव्य, नाटक, चम्पू, कथा, आख्यायिका आदि अनेक प्रकार की साहित्यिक सृष्टि की है। इण्डोनेशिया, जावा, सुमात्रा आदि देशों के साहित्य पर भी *महाभारत* का प्रभाव विद्यमान है। वहाँ के लोग भी *महाभारत* के पात्रों के अभिनय से अपना मनोरंजन करने के साथ-साथ शिक्षा भी ग्रहण करते हैं।

महर्षि वेदव्यास का नाम कृष्णद्वैपायन भी है। *महाभारत* के पात्रों से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था। *महाभारत* के आदि-पर्व में कहा गया है कि कृष्णद्वैपायन ने तीन वर्षों तक निरन्तर परिश्रम से *महाभारत* की रचना की थी। इतिहास के आधुनिक विद्वानों का कहना है कि *महाभारत* को एक लाख श्लोकों का वर्तमान रूप अनेक शताब्दियों के विकासक्रम में प्राप्त हुआ। व्यास ने प्राचीन काल की गाथाओं को एकत्र करके इस ग्रन्थ की मूल रचना की थी। इसके विकास के तीन चरण हैं— *जय, भारत* और *महाभारत*। जय नामक ग्रन्थ में 8,800 श्लोक थे। इसमें पाण्डवों की विजय का वर्णन किया गया था। दूसरे चरण में *भारत* नामक ग्रन्थ प्रस्तुत हुआ, जिसमें 24,000 श्लोक थे। इसमें उपाख्यान नहीं थे। युद्ध का वर्णन ही प्रधान विषय था। इसी *भारत* को वैशम्पायन ने पढ़कर जनमेजय को सुनाया था। इस ग्रन्थ में जब उपाख्यान आदि जोड़े गए तथा इसे व्यापक विश्वकोश का स्वरूप दिया गया, तब इसका नाम *महाभारत* पड़ा। यही *महाभारत* लोमहर्षण के पुत्र उग्रश्रवा द्वारा नैमिषारण्य में शौनकादि ऋषियों को सुनाया गया था। ये उपाख्यान प्राचीन लोककथाओं के साहित्यिक संस्करण थे। इस स्थिति से इसमें एक लाख श्लोक हो गए। यह भारतीय धर्म और संस्कृति का विशाल भण्डार बन गया।

महाभारत के दो पाठ प्राप्त होते हैं- एक उत्तर भारत का, दूसरा दक्षिण भारत का। दोनों में श्लोक-संख्या, अध्यायों का क्रम तथा आख्यानों के स्थान को लेकर बहुत अन्तर है। महाभारत के विशुद्ध रूप को सुनिश्चित करने वाला एक संस्करण पुणे से प्रकाशित हुआ है।

महाभारत का विभाजन पर्वों में हुआ, जिनकी संख्या 18 है— आदि, सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, आश्वमेधिक, आश्रमवासिक, मौसल, महाप्रस्थानिक तथा स्वर्गारोहण। इन पर्वों का पुन: विभाजन अध्यायों में हुआ है। इनमें कौरवों तथा पाण्डवों की उत्पत्ति से लेकर पाण्डवों के स्वर्ग

Reprint 2025-26

जाने तक का वर्णन है। यही *महाभारत* की मूल कथा है। इसमें बहुत से मार्मिक प्रसंगों का वर्णन किया गया है, जैसे— द्यूत-क्रीड़ा, द्रौपदी का अपमान, विराट की राजसभा में पाण्डवों का छद्म रूप से रहना, कौरवों तथा पाण्डवों का युद्ध इत्यादि।

हस्तिनापुर के सिंहासन के लिए कौरवों और पाण्डवों के संघर्ष का इसमें वर्णन है। पाण्डवों ने कौरवों से आधा राज्य प्राप्त कर राजसूय यज्ञ किया, किन्तु ईर्ष्यालु कौरवों ने पाण्डवों को जुए में हराकर उन्हें शर्त के अनुसार तेरह वर्षों के लिए वन जाने को विवश कर दिया। अन्तिम वर्ष में अज्ञातवास की यह शर्त रखी गई कि यदि इस अवधि में पाण्डवों का पता चल गया, तो उन्हें पुन: उतने ही वर्षों के लिए वनवास स्वीकार करना पड़ेगा। पाण्डव सफलतापूर्वक यह शर्त पूरी करने पर अपना राज्य माँगते हैं, किन्तु उन्हें राज्य नहीं दिया जाता। इसीलिए *महाभारत* का युद्ध होता है जो 18 दिनों तक चलता है। इसमें कौरवों का सर्वनाश हो जाता है। उल्लेखानुसार संजय ने युद्ध का वर्णन नेत्रहीन धृतराष्ट्र के लिए एक स्थान पर बैठे-बैठे किया था। युद्ध के आरम्भ में विषादग्रस्त अर्जुन को युद्ध के लिए कृष्ण प्रेरित करते हैं और गीता का अमूल्य उपदेश देते हैं। कर्म की प्रेरणा देने वाला *भगवद्गीता* नामक यह ग्रन्थ इतना महत्त्वपूर्ण है कि प्राचीन काल से आधुनिक काल तक देश-विदेश के दार्शनिकों को प्रभावित करता रहा है।

महाभारत का रचनाकाल बुद्ध-महावीर से पूर्व माना जाता है। इस ग्रन्थ का उल्लेख आश्वलायन गृह्यसूत्र में पहली बार आया है। प्रथम शताब्दी ईसवी में इसका प्रचार दक्षिण भारत में हो गया था।

महाभारत का सांस्कृतिक महत्त्व

महाभारत का महत्त्व सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत अधिक है। यह अपने आप में संपूर्ण साहित्य है। इसके शान्तिपर्व में राजनीति के विषयों का व्यापक एवं गम्भीर प्रतिपादन है। इसके पात्रों को व्यास ने उपदेश का आधार बनाया है, जिससे लोग कर्तव्य की शिक्षा ले सकें। यह एक ऐसा धार्मिक ग्रन्थ है, जिसमें प्रत्येक श्रेणी का मनुष्य अपने जीवन के अभ्युदय की सामग्री प्राप्त कर सकता है। बाणभट्ट ने व्यास को कवियों का निर्माता कहा है, क्योंकि *महाभारत* से कवियों को काव्य सृष्टि के लिए प्रेरणा मिलती रही है। *गीता* में कर्म, ज्ञान और भक्ति का सुन्दर समन्वय है। *महाभारत* में व्यास ने कहा है कि धर्म शाश्वत है। अत: इसका परित्याग किसी भी दशा में भय या लोभ से नहीं करना चाहिए। शान्ति पर्व में कहा गया है कि राजधर्म के बिगड़ने पर राज्य तथा समाज का सर्वनाश हो जाता है। मानव जीवन को धर्म, अर्थ और काम के द्वारा मोक्ष की ओर ले जाने की प्रक्रिया *महाभारत* में अच्छी तरह बताई गई है। इसलिए धर्म, राजनीति, दर्शन आदि सभी विषयों का यह अक्षय कोष है।

Reprint 2025-26

© NCERT not to be republished

गीता

महाभारत के भीष्म पर्व के अन्तर्गत 18 अध्यायों तथा 700 श्लोकों में व्याप्त *गीता* एक स्वतन्त्र ग्रन्थ के रूप में विश्वविख्यात है। युद्ध के आरम्भ में युद्ध के भयावह परिणाम की कल्पना करके अर्जुन विषादग्रस्त हो जाते हैं, तब उन्हें कर्म के लिए प्रेरित करते हुए कृष्ण उपदेश देते हैं। भगवान् कृष्ण के द्वारा उपदिष्ट होने से इसे मूलत: *भगवद्गीता* कहते हैं। यद्यपि अर्जुन को युद्ध के लिए प्रवृत्त करने का उद्देश्य दो-तीन अध्यायों में ही पूरा हो गया था, किन्तु जीवन की व्यावहारिक तथा आध्यात्मिक समस्याओं को सुलझाने के लिए अर्जुन के प्रासंगिक प्रश्नों का उत्तर देने के कारण गीता का आकार बड़ा हो गया।

गीता के अध्यायों को योग कहा गया है। *गीता* में योग का अर्थ है सम-दृष्टि (समत्वं योग उच्यते) अथवा कुशलतापूर्वक कर्म करना (योग: कर्मसु कौशलम्) जिससे बन्धन न हो। गीता में मुख्य रूप से तीन योगों का प्रतिपादन किया गया है— कर्मयोग, ज्ञानयोग तथा भक्तियोग। ये तीनों परस्पर सम्बद्ध तथा पूरक हैं।

कर्मयोग का अर्थ है अपने निर्धारित कर्तव्यों का निष्पादन, भौतिक लाभ की आशा रखे बिना काम करना। इसे 'निष्काम कर्म' भी कहा गया है। कामना से कर्म में आसक्ति होती है, जिससे बन्धन की उत्पत्ति होती है। कृष्ण कहते हैं— "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" (तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने में है, फल तुम्हारे वश में नहीं है।)

ज्ञानयोग इसी की सिद्धि करता है। सर्वोपरि ज्ञान यह है कि विश्व पर नियन्त्रण करने वाला परमात्मा (पुरुषोत्तम) है— 'वासुदेव: सर्वम्।' यह ज्ञान हो जाने पर ही निष्काम कर्म संभव है, अन्यथा मनुष्य को स्वार्थ (सकाम कर्म) से पृथक् नहीं किया जा सकता। कर्म, कर्मफल, प्रकृति आदि सब कुछ पुरुषोत्तम से नियन्त्रित होकर चल रहा है।

भक्तियोग परमात्मा को ही सर्वस्वसमर्पण का नाम है। इसे योग-दर्शन में 'ईश्वर-प्रणिधान' कहते हैं। अपने सभी कर्मों को ईश्वरार्पण की दृष्टि से करें, तो मानव कभी असत्कर्म नहीं कर सकता। *गीता* का वाक्य है— 'तत्कुरुष्व मदर्पणम्।'

भगवद्गीता पर संस्कृत में अनेक टीकाएँ लिखी गई हैं। विश्व की प्राय: सभी भाषाओं में इसके अनुवाद, टीका, विवेचन, निबन्ध, भाष्य आदि लिखे गए हैं। यह संसार के सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थों में है।

महाभारत एवं आधुनिक समाज

महाभारत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह एक शाश्वत धर्म—व्यवस्था का विधान करता है। यह शाश्वत धर्म व्यवस्था, अनेक दृष्टियों से भिन्न होते हुए भी अभिन्न रूप वाली

Reprint 2025-26

है। इस तथ्य को इस रूप में समझा जा सकता है कि महाभारतकार धर्म को रूढ़ व्यवस्था नहीं मानते। वह उसे बदलते समाज एवं काल के साथ परिवर्तनीय स्वीकार करते हैं।

मनुस्मृति एवं *रामायण* आदि में प्रतिपादित धर्म प्राय: रूढ़ हैं जिनका उल्लंघन करने पर मनुष्य पाप का भागीदार बनता है। परन्तु महाभारतकार का कहना है कि धर्म का निर्णय देश, काल तथा व्यक्ति के अनुसार होता है। अत: उसे रूढ़ नहीं माना जा सकता। शाश्वत धर्म को वेदव्यास भी मानते हैं जो त्रिकालाबाधित है तथा सदैव एकरूप ही रहता है। उसका उल्लंघन अवश्य ही क्षम्य नहीं। परन्तु प्रत्येक युग का भी एक विशिष्ट धर्म होता है जिसे युगधर्म कहा जाता है। इसी प्रकार आपद्धर्म तथा व्यक्तिधर्म भी होते हैं। महाभारत-युगीन नियोगप्रथा और एक पाञ्चाली का पाँच व्यक्तियों से विवाह होना युगधर्म के सर्वोत्तम निदर्शन हैं। गोरक्षा के लिए अर्जुन का युधिष्ठिर एवं द्रौपदी के कक्ष में जाना (तथा प्रतिज्ञा तोड़ना) अथवा महर्षि विश्वामित्र का प्राणरक्षार्थ श्वान का मांस खाना आपद्धर्म का उदाहरण है। इसी प्रकार भीष्म का अम्बा से विवाह न करना उनके व्यक्तिधर्म का उदाहरण है।

इस प्रकार *महाभारत* आज के समाज को धर्मभीरु नहीं, प्रत्युत धर्म के प्रति आश्वस्त बनाता है। 'पञ्चानृतान्याहुरपातकानि' कहकर पितामह भीष्म मानो आज के समाज को आश्वस्त करते हैं कि धर्म हमारा सन्तापक वैरी नहीं, प्रत्युत सन्मित्र है, जो प्रत्येक परिस्थिति में हमारी रक्षा करता है।

पुराण

जिस प्रकार वैदिक धर्म का आधार वेद है, उसी प्रकार उत्तरकालीन हिंदू धर्म (वैष्णव, शैव आदि) का आधार *पुराण* है। *पुराण* का अर्थ प्राचीन वर्णन या आख्यान है। पुराणों में वैदिक गाथाओं का व्याख्यान किया गया है। प्राचीन घटनाओं के विस्तृत वर्णन *पुराण* के नाम से विख्यात हुए। पुराणों ने अपना स्वरूप तीसरी शताब्दी ई. पू. में ही लेना आरंभ कर दिया था।

पुराणों का वर्ण्य विषय अत्यन्त व्यापक है। प्राचीन घटनाओं तथा अन्य विभिन्न विषयों का इनमें अतिशयोक्तिपूर्ण तथा कल्पना से भरपूर वर्णन है। ये आलंकारिक शैली में किन्तु सरल संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं। पुराणों में प्राय: अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग किया गया है, किन्तु कुछ पुराणों में गद्य का भी प्रयोग है। *महाभारत* के समान पुराणों में भी अनेक विषयों का विभिन्न प्रकार से वर्णन है, जिससे इनका स्वरूप भी विश्वकोश के समान हो गया है।

Reprint 2025-26

पुराणों में सामान्यत: पाँच विषयों का वर्णन मिलता है— 1. संसार की सृष्टि ,2. प्रलय के बाद पुन: सृष्टि, 3. राजाओं और ऋषियों के वंशों का वर्णन, 4. संसार का कालविभाग और प्रत्येक काल की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन एवं 5. कलियुग के प्रतापी राजाओं के कार्यों का वर्णन—

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।

यह विषयवस्तु सभी पुराणों में प्राप्त नहीं होती है। इनके अतिरिक्त वर्णाश्रम-धर्म, कर्मकाण्ड, भूगोल-वर्णन, व्रत, तीर्थ, नदी, देवता इत्यादि के माहात्म्य का वर्णन भी कई पुराणों में मिलता है। इन वर्णनों में अतिशयोक्तियों की अधिकता है, जिससे वास्तविक तथ्य छिप गए हैं। पुराणों की शैली इतनी लोकप्रिय हुई कि वैदिक धर्म के अतिरिक्त जैन और बौद्ध धर्म के अनुयायियों ने भी इस शैली में रुचि ली और अपने पुराणों का विकास किया।

सामान्य रूप से सभी पुराणों का रचयिता व्यास को माना गया है, किन्तु अपनी शैली तथा विषयवस्तु के कारण इनकी रचना विभिन्न युगों में होती रही है। अधिकांश *पुराण* गुप्तकाल में संकलित हुए जब वर्णाश्रम-धर्म पूर्ण उत्कर्ष पर था।

पुराणों की संख्या 18 है। इसके अतिरिक्त 18 उपपुराण भी हैं। पुराणों को विषयवस्तु तथा देवता के आधार पर तीन भागों में बाँटा गया है। तदनुसार ब्रह्मा, विष्णु और शिव से संबद्ध छ:-छ: *पुराण* हैं। इनका वर्गीकरण सत्त्व, रजस् एवं तमस्— इन तीन गुणों के आधार पर किया जाता है। ये क्रमश: इस प्रकार हैं—

विष्णु से सम्बद्ध (सात्त्विक) पुराण — विष्णु, भागवत, नारद, गरुड़, पद्म और वराह।
ब्रह्मा से सम्बद्ध (राजस) पुराण — ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, भविष्य और वामन।
शिव से सम्बद्ध (तामस) पुराण — शिव, लिङ्ग, स्कन्द, अग्नि, मत्स्य और कूर्म।

महापुराणों में *शिवपुराण* के स्थान पर *वायुपुराण* और *भागवतपुराण* में श्रीमद्भागवत अथवा देवीभागवत का उल्लेख प्राप्त होता है।

पुराणों की नामगणना का संकेत इस श्लोक में मिलता है-

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि पृथक् पृथक्।।

म से दो (मत्स्य, मार्कण्डेय) भ से दो (भविष्य, भागवत), ब्र से तीन (ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त), व से चार (विष्णु, वराह, वामन, वायु) तथा अ से (अग्नि), ना से (नारद), प से (पद्म), लिं (लिङ्ग), ग (गरुड़), कू से (कूर्म), एक से (स्कन्द)— ये पृथक्-पृथक् पुराण हैं।

Reprint 2025-26

उपपुराणों के नामों के विषय में मतभेद है। कुछ मुख्य उपपुराण हैं- *नृसिंह, नारद, कालिका, साम्ब, पराशर, सूर्य* इत्यादि। *रामायण* और *महाभारत* के समान *पुराण* भी परवर्ती कवियों के लिए उपजीव्य रहे हैं।

पुराणों का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मूल्य

पुराणों का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व बहुत अधिक है। प्राचीन भारत के राजनीतिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक ज्ञान के लिए *पुराण* समर्थ आधार हैं। कल्पना और अलंकृत वर्णनों की गहराई में जाकर देखें तो प्राचीन भारत का इतिहास इनमें स्पष्ट दिखता है। पार्जिटर नामक विदेशी विद्वान् ने पुराणों के गम्भीर अनुशीलन से भारतीय राजाओं की वंशावलियाँ प्रस्तुत की थीं, जिनसे उनका ऐतिहासिक महत्त्व सूचित होता है। प्राचीन भारत का व्यापक सांस्कृतिक चित्र इन पुराणों में मिलता है। भारतीय जनमानस के धार्मिक विश्वासों की जड़ में ये पुराण ही हैं। शिव, विष्णु, गणेश, दुर्गा आदि विविध देवताओं की उपासना का आधार भी ये ही हैं। व्रतों और पूजा-पाठ का महत्त्व इन पुराणों में यथास्थान बताया गया है। पुराणों में आख्यानों के द्वारा सामान्य जनता को आचार-विचार की बहुत बड़ी शिक्षा दी गई है। स्वर्ग और नरक के वर्णन से जनता को सही कार्य करने और गलत कार्यों से बचने की शिक्षा देना पुराणों का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

विभिन्न तीर्थों का महत्त्व बतलाकर तीर्थयात्रा के प्रति सामान्य जनता को प्रेरित करके राष्ट्रीय एकता के निर्माण में भी पुराणों की समर्थ भूमिका है। पुराणों ने सम्पूर्ण देश को अखण्ड माना है। विभिन्न सम्प्रदायों को समन्वित करने का प्रयास भी पुराणों ने किया है। पुराणकारों ने सामान्य जनता के लिए ज्ञान-विज्ञान की पूरी सामग्री संकलित तथा पुराणों के पाठ और श्रवण का महत्त्व बताकर अनौपचारिक शिक्षा की दृढ़ व्यवस्था की है।

ध्यातव्य बिन्दु

- *रामायण* और *महाभारत* वैदिक और लौकिक संस्कृत साहित्य के सन्धिकाल के दो महान् ग्रन्थ हैं।
- महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित *रामायण* आदिकाव्य है, जिसका विभाजन सात काण्डों में हुआ है— बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड।
- महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित *महाभारत* में पाण्डवों की उत्पत्ति से लेकर स्वर्गगमन तक की कथा है। एक लाख श्लोकों के कारण इसे *शतसाहस्रीसंहिता* भी कहते हैं। कुछ लोग इसे *पंचम वेद* भी कहते हैं।

Reprint 2025-26

- *गीता महाभारत* का अंग है। 18 अध्यायों तथा 700 श्लोकों में व्याप्त इसे स्वतन्त्र ग्रन्थ भी माना जाता है।
- *पुराण* वेद के गूढ़ विषयों तथा प्राचीन सांस्कृतिक तथ्यों का उद्घाटन है। पुराणों की संख्या 18 मानी गई है— मत्स्य, मार्कण्डेय, भागवत, भविष्य, ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, वायु, वामन, वराह, विष्णु, अग्नि, नारद, पद्म, लिङ्ग, गरुड़, कूर्म और स्कन्द।

अभ्यास-प्रश्न

प्र. 1. उपजीव्य काव्य किसे कहते हैं?
प्र. 2. *रामायण* और *महाभारत* किन दृष्टियों से भिन्न हैं?
प्र. 3. *रामायण* के रचयिता कौन हैं?
प्र. 4. अभी रामायण के कितने संस्करण उपलब्ध हैं?
प्र. 5. *रामायण* की रचना का काल किस शताब्दी में माना जाता है?
प्र. 6. *रामायण* में कितने काण्ड हैं? प्रत्येक का नाम लिखिए।
प्र. 7. *रामायण* में कितने श्लोक हैं?
प्र. 8. वाल्मीकि ने *रामायण* में जीवन के किन आदर्शों को प्रस्तुत किया है?
प्र. 9. *महाभारत* को *शतसाहस्रीसंहिता* क्यों कहते हैं?
प्र. 10. कौन-सा विश्वप्रसिद्ध दार्शनिक ग्रन्थ *महाभारत* का अंश है?
प्र. 11. *महाभारत* के लेखक कौन हैं?
प्र. 12. महर्षि व्यास का दूसरा नाम क्या है?
प्र. 13. *महाभारत* के विकास के चरणों के नाम बताएँ।
प्र. 14. *महाभारत* कितने पर्वों में बँटा हुआ है?
प्र. 15. *गीता महाभारत* के किस पर्व में है?
प्र. 16. *पुराणों* का रचयिता किसे माना गया है?
प्र. 17. *पुराणों* में मुख्यत: किस छन्द का प्रयोग हुआ है?
प्र. 18. *पुराणों* की संख्या और उनके नाम लिखिए।
प्र. 19. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) पुराणों का वर्गीकरण विष्णु .... और सत्त्व .... इन तीन गुणों के आधार पर किया गया है।

(ख) पुराणों में आख्यानों के द्वारा सामान्य जनता को ....की शिक्षा मिलती है।

(ग) *महाभारत* में .... और .... के युद्ध का वर्णन है।

(घ) *गीता* .... की प्रेरणा देने वाला ग्रन्थ है।

(ङ) *पुराण* का अर्थ .... वर्णन या आख्यान है।

Reprint 2025-26

© NCERT not to be republished